सोला

| सोला –

सोला के संबंध में वर्तमान में भ्रमपूर्ण स्थिती बनी हुई है |आज सोला से तात्पर्य इतना ही समझा जाता है कि वस्त्रों को सुखाकर पहन लेना, मात्र वस्त्र शुध्दि तक ही सोला सिमटकर रह गया है |यदि हम सोला के संबंध में थोडा गहराई से विचार करें तो हमें समझ में आयेगा कि हमारा वास्तविक सोला क्या है? सोला को यदि हम सोलह की संख्या से जोडें तो नवधा भक्ति (पडगाहन) उच्चासन, पाद प्रक्षालन, पूजन, नमन, मनशुध्दि, वचनशुध्दि, काय शुध्दि, आहार एवं जलशुध्दि)और दाता के सात गुण (श्रध्दा, भक्ती, तृष्टी, विवेक,अलुब्धता, अमात्सर्य, क्षमा,) इन्हे जोडने पर कुल सोलह होता है | यदि हम नवधा भक्ति और दाता के सात गेणों को को ध्यान में रखकर आहारदान देते हें तो यही हमारा वास्तविक सोला होता है |

वस्त्र शुध्दि संबंधी आहार के लिये प्रयोग मे लाये जाने वाले वस्त्र धुले हुये शुध्द होने चाहिये | आजकल देखा जाता है की जितने दान देने वाले है वे अक्सर अपने अपने पहने हुए वस्त्र उताकर धोती दुपट्टा पहिन लेते है जो की अनुचित है | हमे शरिर से सारे वस्त्र उताकर गीले अंगोछे से शरिर पोंछकर फिर शुध्द कपडे पहने चाहिये एवं जिन कपडो से हम कभी भी लघुशंका आदि गये हो उन कपडो को पहनकर आहार नही देना चाहिये |

वस्त्र कैसे होना चाहियेः एक वस्त्र पहनकर, फटा वस्त्र जीर्ण ,बहुत पुराना ,छेद सहति मलिन वस्त्र ,काला ऊन से बना हुआ, जल गया हो ,चुहो के द्वारा कतरा गया, गाय भैंस द्वारा खाया गया, धुये मे वर्ण वाला ,अत्यंत छोटा हो आदी इन वस्त्रो को पहिन कर आहार दान नही देना चाहिये, धोती, दुपट्टे, अखण्ड वस्त्र माने जाते है | उन्हे ही पहिन कर आहार दान दे |(नोट - रेशम टेरीकॉट, टेरीलीन, वुली ,सिलकर ,मखमल ,ऊनी एवं कोरे वस्त्र बिना धुले) जालीदार आदि वस्त्र नही पहने और कलावा धागा आदि यदी पहने होत उन्हे गीला करके ही शुध्द कपडे पहने |)

सोला- सोलह प्रकार कि शुध्दि-

1. **द्रव्य शुध्दि-** (अ) अन्न शुध्दि खादय सामग्री सडी, गली, घुनी एवं अभक्ष्य न हो| (ब) जल शुध्दि- जल जीवानी किया हुआ हो, प्रासुक हो नल का न हो| (स) अग्नि शुध्दि ईंधन देखकर शोधकर उपयोग किया गया हो| (द) कर्ता शुध्दि भोजन बनाने वाला स्वस्थ हो तथा नहा धोकर साफ कपडे पहने हों, नाखून बडे न हो, अंगुली बगैरह कट जाने पर खून का स्पर्श खादय वस्तु से न हो, गर्मी मे पसीना का स्पर्श न हो, या पसीना खादय वस्तु मे न गिरे|
2. **क्षेत्र शुध्दि -** (अ) प्रकाश शुध्दि- रसोई मे समुचित सुर्य का प्रकाश रहता हो | (ब) वायु शुध्दि- रसोई मे शुध्द हवा का आना जाना हो| (स) स्थान शुध्दि- आवागमन का सार्वजनिक स्थान न हो एवं अधिक अंधेरे वाला स्थान न हो| (द) दुर्गंधता से रहित- हिंसादिक कार्य न होता हो गंदगी से दूर हो |
3. **काल शुध्दि -** (अ) ग्रहण काल- चन्द्र ग्रहण या सुर्यग्रहण का काल न हो | (ब) शोक काल- शोक दुःख अथवा मरण का काल न हो | (स) रात्रि काल रात्रि का समय न हो | (द) प्रभावना काल धर्म प्रभावना अर्थात उत्सव का काल नहो |
4. **भाव शुध्दि -** (अ) वात्सल्य भाव पात्र और धर्म के प्रति वात्सल्य होना | (ब) करूणा का भाव सब जीवों एवं पात्र के ऊपर दया का भाव | (स) विनय का भाव पात्र के प्रति विनय के भाव का होना | (द) दान का भाव- कषाय रहित हर्ष सहित ऐसे भोजन हितकारी होता है, दान करने का भाव होना |